प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कृषि शिक्षा के साथ खेती करने से जागृत होता है विद्यार्थियों में आत्मविश्वास

पंतनगर। २८ जून २०१८। गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कृषि स्नातक विद्यार्थी आजकल अपनी शिक्षा के साथ ही खेत पर धान की फसल की रोपाई कर रहे हैं। ये विद्यार्थी वास्तविक रूप से स्वयं फसल उत्पादन करते है तभी वे आत्मविश्वास से भरे होते है। विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही कृषि शिक्षा में 'व्यावहारिक फसल उत्पादन कार्यक्रम' को अपनाया गया था तथा इसकी सफलता व उपयोगिता को देखकर देश में बाद में स्थापित कृषि विश्वविद्यालयों ने भी इसे अपनाया। व्यावहारिक फसलोत्पादन केन्द्र के प्रभारी डा. नरेश मलिक के अनुसार प्रायोगिक फसल उत्पादन नामक इस योजना के तहत जहां एक ओर विद्यार्थियों को कृषि की व्यावहारिक जानकारी प्राप्त होती है वहीं दूसरी ओर वे कृषि उत्पादों का विक्रय कर शिक्षण के साथ आय भी अर्जित करते हैं।

डा. मलिक ने बताया कि व्यावहारिक फसल उत्पादन कार्यक्रम कृषि स्नातक तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों का एक कोर्स है, जो वर्ष १९९३ में प्रारम्भ किया गया था। डा. मलिक के अनुसार व्यावहारिक फसल उत्पादन का उद्देश्य मुख्यतः विद्यार्थियों में नेतृत्व की भावना को जागृत करना, पढ़ाई के साथ कमाई करना और आपस में सहयोग की भावना पैदा करना है। उन्होंने बताया कि प्रायोगिक फसल उत्पादन के अन्तर्गत विद्यार्थी द्वारा फसलों का बीज उत्पादन कराया जाता है।

प्रभारी ने बताया कि इस वर्ष कुल ८६ विद्यार्थी व्यावहारिक फसल उत्पादन के अन्तर्गत शामिल हुए हैं, जिनमें ३५ छात्र और ५१ छात्रायें हैं और इसके लिए विश्वविद्यालय की तरफ से लगभग ११ हैक्टर भूमि आवंटित की गई है। इस भूमि में प्रति आठ विद्यार्थियों के समूह को एक हैक्टर भूमि आवंटित कर फसल उत्पादन की सभी लागतों को विश्वविद्यालय की ओर से मुहैया कराया जाता है। उत्पादित बीजों की बिक्री से अर्जित आय में से इन लागतों को घटाकर विद्यार्थियों में वितरित कर दिया जाता है। डा. मलिक ने बताया कि विगत वर्षों के अनुसार इस व्यावहारिक प्रशिक्षण से विद्यार्थियों के प्रत्येक विद्यार्थी को कुल लाभ कम से कम रू. ५,००० और अधिकतम रू. १४,००० तक प्राप्त हुआ है।

डा. मलिक के अनुसार विद्यार्थियों की जानकारी और सहयोग के लिए सस्य विज्ञान विभाग के ५ वैज्ञानिकों की टीम है जो विद्यार्थियों को खेत की तैयारी, नर्सरी, बुआई, खरपतवार नियंत्रण, से लेकर रोग-कीटों का नियंत्रण कर मड़ाई तक की सभी जानकारी उपलब्ध कराते हैं। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम के प्रत्येक समूह में छात्र-छात्राओं की संख्या लगभग बराबर होने से कृषि क्षेत्र में महिलाओं की हिस्सेदारी भी बराबर की सुनिश्चित हो रही है। साथ ही उन्होंने बताया कि व्यावहारिक फसलोत्पादन कार्यक्रम से विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ता है साथ उन्हें प्रक्षेत्र में कार्य करने का अनुभव प्राप्त हो रहा है।

व्यावहारिक फसल उत्पादन कार्यक्रम के अन्तर्गत आवंटित खेत पर धान की रोपाई करते विश्वविद्यालय के विद्यार्थी